Dr. Madan Paswan, History.

Class: B.A. Part-II (Hons.) Paper-IVth

Date: 28.10.2020

Lecture No. 29

(1)

Topic: सामंती व्यवस्था के मुख्य लक्षण.

सामंती व्यवस्था के अन्तर्गत दो मुख्य वर्ग थे:-

(क) सामंत

(ख) पराधीन किसान।

सामंत जमीन के स्वामी थे और अधीन किसानों को शोषण करते थे। जहाँ दास अपना सारा समय मालिक के लिए खटते हुए बिताता था, वहाँ अधीन किसान के पास कुछ समय अपने लिए होता था और वह अपने ही औजारों को इस्तेमाल करते हुए अपने खेत पर काम कर सकता था। उसकी जोत से उत्पन्न पैदावार के कुछ हिस्से को किसान की अपनी संपत्ति समझा जाया करता था।

दास को अपने मालिक की संपत्ति, उसका "बोलता औजार" समझा जाता था। पराधीन किसान पर सामंत का प्रभुत्व पूर्ण नहीं था: वह किसान को - सामान्यतया उसकी जोत के साथ - बेच या उसे कठोर दंड तो दे सकता था, मगर कानून उसे किसान को जान से मारने का अधिकार नहीं देता था।

दासों के विपरीत पराधीन किसान की अपने श्रम के परिणामों में कुछ दिलचस्पी होती थी। किसान कृषि विधियों को सुधारने की कोशिश करते थे ताकि कुछ ज्यादा पैदा कर सकें। वे अपने काम के औजारों का ध्यान रखते थे और उन्हें सुधारते, बेहतर बनाते रहते थे।

लेकिन जोतों का आकार आम तौर पर छोटा और शोषण बहुत ही कठोर होता था, कृषि में नयी प्रविधियों और नये औजारों का विकास बहुत मंथर था, इसलिए पैदावार कम ही होती थी। खेती के औजारों का पिछड़ापन ही उस समय निर्वाह अर्थव्यवस्था में प्राधान्य का मुख्य कारण था।

प्रारंभिक मध्य युग में अलग-अलग इलाके लगभग एक जैसे ही खाद्य पदार्थों और सामानों को उत्पादित करते थे, इसलिए व्यापार भी अधिक विकसित नहीं था। कठोर सामंती उत्पीड़न के परिणामस्वरूप सामंतों और किसान के बीच प्रचण्ड वर्ग संघर्ष उत्पन्न हो गया। आरंभ

Contd...

में किसानों ने अपनी जमीन और अपनी आजादी को बचाने की, पुरानी सामुदायिक व्यवस्था को वापस लाने की कोशिश की, लेकिन आगे चलकर उन्होंने सारा जोर इसी के लिए लगाया कि सामंतों द्वारा लगाये जानेवाले करों और वसूलियों का बढ़ना रोकें।

Continue...